लाकडाउन के कारण सुधी पाठकों तक पत्रिका का यह अंक ई-जर्नल के रूप में प्राप्त होगा।

C Approved Research Journal No. 47845

ISSN : 2319-6513

साहित्य वीथिका

Sahitya Veethika

Peer Reviewed Bilingual Bi-Annual
International Research Journal

(अर्धवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

र्ष : 09 अंक : 16-17 (संयुक्तांक) दिसम्बर 2019, जून 2020

संपादक : डॉ. दिलीप मेहरा

वर्ष : 09
अंक - 16-17 (संयुक्तांक)

साहित्य वीथिका

UGC Approved Research Journal No. 47845

ISSN : 2319-6513
दिसम्बर 2019, जून 2020

संपादक
डॉ. दिलीप मेहरा

○

परामर्शक
डॉ. पारुकान्त देसाई, डॉ. बापूराव देसाई (महाराष्ट्र), डॉ. [redacted] कुशवाहा (रीवा)
तेजेन्द्र शर्मा (लंदन), डॉ. मदनमोहन शर्मा, डॉ. सुरेश गढवी

○

संरक्षक
डॉ. मालती दुबे, डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़'

○

सम्पादक मण्डल
डॉ. शिवप्रसाद शुक्ल (उपसंपादक)
डॉ. दीपेन्द्र जडेजा, डॉ. प्रेमचन्द कोराली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, डॉ. हसमुख परमार

○

प्रकाशक
उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
ए-685, आवास विकास, हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर-208021
मो. 8707273195, ई-मेल : utkarshpublishers@gmail.com

○

कला सज्जा
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

○

व्यवस्थापकीय पता
शोभा मेहरा
यश भवन, प्लॉट नम्बर - 1423/1, शालिनी अपार्टमेंट के पीछे,
नाना बाजार, वल्लभ विद्यानगर, जि. आणंद - 388120
ई-मेल : mehradilip52@gmail.com, सचलभाष - 9426363370

पत्रिका में प्रकाशित कविता, लेखादि में अभिव्यक्त विचारों से प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवादों के लिए न्यायालय का क्षेत्र आणंद, गुजरात होगा।

Peer reviewed bilingual bi-annual International Research Journal

सदस्यता शुल्क
वार्षिक 200 रुपये
पंचवर्षीय 1500 रुपये
आजीवन 3000 रुपये
संस्था के लिए : वार्षिक 300 रुपये
आजीवन 3500 रुपये

लाकडाउन के कारण सुधी पाठकों तक पत्रिका का यह अंक ई-जर्नल के रूप में प्राप्त होगा।

अनुक्रम

1. जीवंत बहस के मुद्दे
प्रो. शिवप्रसाद शुक्ल 05

2. डॉ. पूर्वा शर्मा के हाइकु–काव्य में पिरोए प्रेम–पुलक पल
डॉ. हसमुख परमार 11

3. मेरी दृष्टि से 'दुनिया की सबसे हसीन औरत'
भगोरा हिम्मतसिंह एन. 17

4. सागर त्रिपाठी की ग़ज़ल 'होता हुआ' : आस्वाद
डॉ. सतीन देसाई 'परवेज' 21

5. 'तमन्ना' की लाफानियां...
डॉ सतीन देसाई 'परवेज' 24

6. नारी चेतना और 'अंधा कुआँ'
इन्दिरा बी. वसावा 29

7. अज्ञेय की कविताओं में व्यंग्य
पूनम सिंह 31

8. 'परिन्दे' : अकेलेपन की त्रासदी का दस्तावेज
डॉ. मनीष गोहिल 35

9. समकालीन हिंदी नाटकों में प्रतिबिंबित सामाजिक परिवेश
डॉ. जशाभाई पटेल 38

10. काव्य रचना में कवि की अनुभूति और संवेदना का प्रयोग
डॉ. करसन रावत 41

11. हिन्दी आलोचना के विराट व्यक्तित्व : नामवर सिंह
डॉ. सुरेश पटेल 45

12. 'कबीरी तार' के वस्तु पक्ष में नारी
डॉ. सुनिल बारीआ 48

13. बदलता हुआ आदिवासी समाज
डॉ. माया प्रकाश पाण्डेय 50

14. पत्रकारिता और साहित्य
डॉ. अनिता ए. सालुंके 53

15. हिन्दी साहित्य में भारतीयता की व्यापक अवधारणा
डॉ. राहुल शुक्ला, अरुण कुमार 56

16. महादेवी वर्मा में नारी चेतना का स्वर
विवेक कुमार 60

17. हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति का संगम : अक्षयवट
डॉ. कोरडिया चंचल जे. 64

18. मानवतावादी छत्रपति शिवाजी (भूषण के काव्य में)
प्रा. डॉ. जयश्री भास्कर वाडेकर 68

19. कुंती उपन्यास की मूल संवेदना
अंजना जे. राठवा 73

20. 'मोहम्मद अल्वी' शख़्सियत और शेरी कायनात
प्रो. डॉ. रहमत अली सैयद 77

21. 'बूंद और समुद्र' उपन्यास में प्रतिबिम्बित लखनऊ का जन–जीवन
विजय प्रकाश यादव 79

22. सोशल मीडिया का साहित्य तथा अन्य क्षेत्रों पर प्रभाव
डॉ. अनु मेहता 83

23. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के काव्यों में सामाजिक चेतना
डॉ. ईश्वर आहिर 87

24. 'आखिरी दिन' उपन्यास में निरूपित आतंकवाद
प्रियंका श्रीमाली 90

25. 'कसप' उपन्यास की मूल संवेदना
शारदा देवी आर. राजपूत 92

26. महिला सशक्तिकरण पर गांधी : शादी और शिक्षा में
डॉ. मुकेश वी. जोशी 95

■ काव्य सृष्टि दो ग़ज़लें डॉ. सतीन देसाई परवेज़ 23

■ लघुकथा : छुट्टी का आनंद 67
डॉ. धनंजय चौहान

27. Sri Aurobindo's approach on the Rig Veda
Kinix Hande 92

28. GENERAL CONCEPT OF RESEARCH METHODOLOGY
Dr. Dilip G. Nandha 98

29. ACTION OF THE INDIVIDUAL HOMOEOPATHIC MEDICINES ONANXIETY LEVEL IN GERD CASES THROUGH HAMILTON ANXIETY RATING SCALE (HAM-A)
DR. DILIP G. NANDHA 102

30. TO UNDERSTANDING THE INDICATION OF SILICEA REMEDY IN THE MANAGEMENT OF OSTEOARTHRITIS KNEE
Dr. Ami B. Majmundar 105

31. EXPLORING THE ROLE OF RHUS TOX & BRYONIAALBA INACUTEAILMENTS OF BONE & JOINT DISEASES.
Dr. Ami B. Majmundar 107

32. TO UNDERSTAND THESUSCEPTIBILITY IN SELECTION OFPOSOLOGYAND EVOLVING DIFFERENT MATERIA MEDICA IMAGES IN CASE OF CHRONIC BRONCHITIS
Dr. Chirag Shah 111

33. TO UNDERSTAND THE QUALITATIVEAND QUANTITATIVE ASPECT OF SUSCEPTIBILITY IN CASES OF BRONCHIALASTHMA
Dr. Chirag Shah

34. PUBLIC PRIVATE PARTNERSHIP MODEL AND INDIAN ECONOMY
Dr. Afroz 122

35. PARTITION AND CULTURAL TRAUMA IN NADIA HASHIMI'S THE PEARL THAT BROKE ITS SHELL & KAMILA SHAMSIE'S SALT AND SAFFRON *SALT AND SAFFRON.*
Kaisarjahan M. Ansari 125

36. निराला के काव्य में राष्ट्रीय चेतना 130
सुमन कुमारी

37. आदिवासी स्त्री चेतना के संदर्भ में निर्मला पुतुल की कविताएँ 134
राकेश कुमार यादव

21. 'बूंद और समुद्र' उपन्यास में प्रतिबिम्बित लखनऊ का जन-जीवन

❖ विजय प्रकाश यादव

अमृतलाल नागर ने लखनऊ के निर्माण और विकास की चर्चा करते हुए इस बात की ओर संकेत किया है कि विभिन्न जनपदों के लोग व्यापार के लालच से एक जगह पर आकार इकट्ठा होते हैं, तथा उनके विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों की विशेषताओं को लेकर नगर की सामाजिक मर्यादा बनती है।[1]

बूंद और समुद्र, नागर जी की सुदीर्घ औपन्यासिक सृष्टि 'महाकाल' और 'सेठ बांकेमल' के पश्चात तीसरा वृहदाकार उपन्यास है। जो स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जन-जीवन की विसंगतियों, समस्याओ और संबंधो को व्यक्त करने के लिए लखनऊ के चौक मुहल्ले को कथाभूमि बनाकर चला है। यह उपन्यास सन् 1956 ई. में प्रकाशित हुआ था। अज्ञेय से हुई भेटवार्ता में नागर जी ने कहा था- "जब उदय शंकर की फिल्म लिखने गया था 'कल्पना' और 'सुब्बालक्ष्मी' की 'मीरा' का डबिंग किया तो छः महीने रहा था वहाँ पर वहीं पर हमको 'बूँद और समुद्र' के नाम कम से कम मिला, प्रेरणा मिली। उसके नोट्स, शुरू के नोट्स वहीं बनाए थे।"[2] वृहद कथाजाल, प्रतिपाद्य-बोधक प्रतिकात्मक नामकरण, विपुल विचार-राशि, बहुरंगी समाज-चित्रण, पात्रों का बाहुल्य और समाधानाकारी अंत-औपन्यासिक महाकाव्य 'बूँद और समुद्र' में समाविष्ट है। उपन्यास लेखनावधि के बारे में डॉ. रामविलास शर्मा का कथन है-" नवंबर सन् 1053 में उन्होंने यह उपन्यास लिखना आरंभ किया और जून 1955 में उसे समाप्त किया। डेढ़ साल से थोड़ा अधिक समय लिखायी मे लगा। सामाग्री बटोरने और उसे पचाने में जितना अधिक समय लगा, उसे देखते लिखाई की अवधि नगण्य थी। सन् 1946 से सन् 1953 तक का समय तो सीधे इस उपन्यास की तैयारी में लगा, काम तो वह और पहले से कर रहे थे। कितने समय पहले से ? बचपन से, जब लेखक बनने की बात भी न सोची होगी।"[3] नागर जी की स्वीकारोक्ति है- "बुधवार, आषाढ़ कृष्ण पंचमी तदनुसार, 19 जून सन् 1946 ई. की सायंकाल मैंने कथावस्तु की व्यापक रूपरेखा बनाई।"[4] 'बूँद और समुद्र' अपने आकार-प्रकार की दृष्टि से ही नहीं, अपितु प्रतिपाद्य, महत्व और विषय की दृष्टि से भी नितांत नवीन प्रतीत होता है। इसमें नागर जी ने एक विशाल कैनवास पर अनेक सामाजिक विषयों का चित्रण बेबाक ढंग से किया है। डॉ. राजेन्द्र यादव 'बूँद और समुद्र' को 'गोदान' के बाद का उत्तर भारतीय जीवन का दूसरा महाकाव्य कहते हैं। यद्यपि विषय की दृष्टि से मात्र लखनऊ का चौक मुहल्ला केंद्र में हैं, पर अंततः यह चौक मुहल्ला पूरे भारत की गाथा प्रस्तुत करता है। नागर जी 'बूँद और समुद्र की भूमिका में लिखते हैं- "इस उपन्यास में मैंने अपना और आपका, अपने देश के मध्यवर्गीय नागरिक समाज का, गुण-दोष भरा चित्रा ज्यों का त्यों आँकने का यथामति, यथासाध्य प्रयत्न किया है अपने और आपके चरित्रों से ही इन पात्रों को गढ़ा है। 'बूँद और समुद्र' उपन्यास के क्षेत्र के रूप में मैंने लखनऊ और उसमें भी खास तौर पर चौक को ही उठाया है। यह इसलिए किया कि नागरिक सभ्यता कि परंपरा देखने में, बोली-बानी का रंग घोलने में, मुझे सबसे अधिक सुभीता यही हो सकता था। जिन गलियों में मेरे उपन्यास की घटनाएँ घटी हैं, वे गलियाँ हूबहू लगने पर भी लखनऊ के वास्तविक 'चौक' में आपको ढूँढे नहीं मिलेगी।"[5] यह लेखक की चतुराई है। 'बूँद और समुद्र' व्यापक, विस्तृत और जनसंकुल दुनिया का वृहद्काय उपन्यास है।

'बूँद और समुद्र' की कथा 68 प्रकरणों में विभाजित है। मूल उपन्यास के आधार पर 606 पृष्ठों में और अमृतलाल नागर रचनावली खंड–2 के आधार पर 559 पृष्ठों में यह कथा फैली हुई है। इस उपन्यास में विविधता और विस्तार पूरी रंजनता के साथ प्रस्तुत हुआ है। उपन्यास की अभिव्यक्ति शैली कुछ ऐसी है कि प्रमुख कथा के साथ–साथ अनेक प्रसंग–किस्से–कहानियाँ जुड़ती चली जाती हैं। कथा के साथ अंतर–कथाओं का सिलसिला अनवरत चलता रहता है। यदि हम यह कहें कि नागर जी अनेक अंतर–कथाओं के साथ मनोरंजक किस्सों का जाल बिछाया है, तो अनुचित नहीं होगा। इन सारी कथाओं, अंतर–कथाओं एवं प्रसंग–किस्से–कहानियों को संक्षेप में प्रस्तुत करना स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है। अतः यहाँ हम कथानक के प्रमुख सूत्रों को ही संक्षेप में स्पष्ट करते हुए लखनऊ के जन–जीवन के वस्तुपक्ष को समझने का प्रयत्न करेंगे।

'बूँद और समुद्र' में ताई की कथा आधिकारिक कथावस्तु है। वस्तुपक्ष की विशेषता इस बात में भी है कि प्रमुख कथानायक की न होकर उपन्यास के प्रमुख चरित्र ताई की है। उपन्यास की शुरुआत जाड़ों की धूप में छतों पर वैठी स्त्रियों से होती है जो रोजमर्रा के काम सीने–पिरोने, बीनने–फटकने और साग–तरकारी काटने में लगी है। भभूति सुनार की दोनों बहुएं–छोटी और बड़ी पड़ोसिन तारा से वतिया रही हैं। नई पड़ोसिन के रूप में तारा जवान स्त्रियो की हिरोइन है, उसने प्रेम विवाह किया है। कोई उसे तारा नाम से पुकारे तो उसे ऐतराज है मिसेज वर्मा कहने पर जोर देती है। 'तारा' तो 'उन्हीं' के मुँह से अच्छा लगता है। उसने उस जमाने के हिसाब से ऊँची शिक्षा प्राप्त की है, क्योंकि वह इंटरमीडिएट है। बड़ी का पति पिता के ही धंधे को सँभाल रहा है। छोटी का पति एम.ए. कर रहा है। वह अफसर बनना चाहता है। भभूति की बेटी नंदो को उसके पति ने छोड़ दिया है। सत्ताईस साल की उम्र में ही पुरखिनों जैसा करती हुई वह मायके में ही रहती है। ताई की सोहबत में वह टोने–टोटकों और मंत्र–तंत्र से लेकर कुटनी–पेशा तक, सब कुछ करती है। बड़ी और विरहेश के मिलन में वह सहायता भी करती है। विरहेश से अधिक धनलाभ न मिल पाने के कारण बड़ी के लिए और को फाँसने के प्रस्ताव रखती है। व्रत–उपवास और परनिंदा में ही उसे परम सुख प्राप्ति होती है। प्रारम्भिक पृष्ठों में ही नागर जी ने स्त्रियों के चारित्रिक गुणावगुणों की ओर पैनी दृष्टि डाली है और अनेक संभावनाओं की ओर इंगित किया है।

वस्तुपक्ष में ताई का किरदार अधिक प्रभावी बन पाया है। ताई सर द्वारकादास राजबहादुर अग्रवाल की परित्यक्ता पत्नी है। हवेली का किराया और पति द्वारा बंधा हुआ अढ़ाई सौ रूपया प्रतिमास उनका आधार है। ताई खिचड़ बालों वाली पौढ़ा है जिसे जमाने भर से शिकायत है। उनके पास गालियों का अक्षर भंडार है जिसे वे बिना किसी भेद–भाव के गली–मुहल्लों में, घर–बाहर सर्वत्र मुक्त भाव से लुटाती है। उन्हें सबसे द्वेष–भावना है। वे अपने जादू–टोनों से सबका नाश करने में तत्पर है। ताई एक लड़की की माँ भी बनी, पर सिर्फ आठ महीने की होकर चल बसी थी। ताई का यही प्रारम्भिक शोक धीरे–धीरे एक भयानक प्रतिहिंसा में बदला जिसने उनसे समूचे व्यक्तित्व और समूची जीवन–धारा को अवांछित दिशाओं की ओर मोड दिया। पुरखों की हवेली में रहने वाली ताई सम्पूर्ण चौक मुहल्लों और सारे शहर की ताई बन गई। लड़ाई–झगड़ा, टोना–टोटका, आटे के पुतले बना–बनाकर लोगों के घर रखना ही जैसे उनका लक्ष्य हो गया। ताई के व्यक्तित्व के इस पहलू को देखते हुए यह कल्पना करना भी संभव नहीं कि यही ताई बिल्ली के सद्यरु जात बच्चों को पाकर ममता से भर उठेगी। उसे सहसा अपनी मृत बेटी की भी याद आ गई। वही ताई, जिसके मन में तारा के प्रति हिंसा का भाव है, परंतु वक्त आने पर कितनी बदल जाती है। ताई अपनी हिंसा भूलकर तारा के प्रसव–वेदना से पार उतारने मे मदद करती है। यहाँ सारी उद्विग्नता, विवशता ताई में केन्द्रित है। पाठक साँस रोककर सोचने लगता है ताई आगे क्या करेगी ?" जरा–सी हींग देखकर ताई और झुंझलाई ! आप सौरी में थी, इसलिए वर्मा को ही अपने घर के मसालदान का पता बतलाया, अपने ठाकुर जी की कोठरी में टांड पर रखे हुए कुल्हड़–सकोरों का पता बतलायाय मुट्ठी भर हींग और एक सकोरा लाने कि आज्ञा दी। पानी अब तक गर्म न होने पर

वर्मा को गालियां सुनाईं। ताई ने जच्चा–बच्चा की सफाई की दशमूल के काढ़े के अभाव में सकोरे का छौंक देकर हींग का काढ़ा तारा को पिलाया, उसके पेट में सकोरा बांधा। जमीन खोदकर बच्चे की नाल गाड़ी और बड़बड़ाहट की अनवरत धारा में बहते हुए सब कामों में निश्चित होकर घर जाने से पहले एक बार पलंग के निकट आकर बच्चे को झुककर भरी नजर देखती रही। बच्चा सो रहा था। ताई को लगा बालमुकुंदे सो रहे हैं। उसके सिर पर हाथ फेर, तारा को दो–चार आदेश देकर ताई निबटने–नहाने चलीं।[6] यह ताई के चरित्र का दूसरा पहलू है। आज वर्मा और तारा ने ताई के अकल्पनीय रूप के दर्शन किए। उनके ऊपर तरह–तरह के टोने–टोटके करने वाली, शत्रुता रखने वाली ताई कितने बड़े संकट से उबार गयीं। यह निष्काम सेवा, पराए के लिए यह प्रेम–भाव, ताई में सहसा कहाँ से उत्पन्न हो गया, यह बात उनके लिए एक रहस्य ही बनी रही। इसके अलावा भी अन्य ऐसी कई घटनाएँ हैं, जो उसके चरित्र को बहुत ऊँचा उठाती हैं। सज्जन वह व्यक्ति था, जिसे ताई से मातृतुल्य प्यार मिला। वह सज्जन के लिए पचास तोला सोना चढ़ाने का वायदा करती है। अपने राधा–कृष्ण का विवाह वह बेहद धूम–धाम से करती हैं और राधा की ओर से हजारों रुपये दहेज में बाबा रामजीदास के पागलों के आश्रम के लिए दे देती है। लेखक ने ताई के चरित्र में सहज मानवीयता के दर्शन करवाये हैं। ताई के नेकदिल कार्यों से भूतकाल के भयंकर कार्य पाठक शनैरू शनैरू भूलने लगते हैं। और वह सम्पूर्ण मुहल्ले के लिए श्रद्धा–पात्र बन जाती है। ताई की मृत्यु ने समूचे मुहल्ले को भारी सदमा पहुँचाया। ताई के बहुरूपिये जीवन की यह कथा उपन्यास की एक प्रमुख कथा सबसे महत्वपूर्ण एवं मार्मिक कथा है।

'बूँद और समुद्र' की दूसरी प्रमुख कथा सज्जन से संबंध रखती है। वह एक ख्यातिप्राप्त चित्रकार है जिसे विरासत के रूप में पूर्वजों की अपरिमित संपत्ति प्राप्त हुई है। जनसामान्य से परिचय बनाने हेतु वह ताई का किरायेदार बनता है। सामाजिक जीवन के प्रति उन्हें गहरा लगाव है। कुछ समय पश्चात् सज्जन का परिचय वन कन्या नामक एक प्रगतिशील विचारों वाली लड़की से होता है। वन कन्या के यहाँ पारिवारिक वातावरण सराहनीय नहीं था। अतः वह विक्षुब्ध–सी रहती है। उसने अपने पिता तथा परिवार वालों से हटकर विद्रोह किया और अपराधी पिता के खिलाफ जनमत का सहारा लेकर मुकदमा लड़ती है। सज्जन तथा उसके मित्र कर्नल, महिपाल आदि वन कन्या की सहायता करते हैं। सज्जन और वन कन्या के मन में से दोनों को नई राह मिली। वन कन्या के आगमन से सज्जन के विचार में परिवर्तन होता है। अब तक काम और विवाह के प्रश्न पर अपनी स्वछंद धारणाओं के जाल में उलझा हुआ था। इस कारण से वह अनेक नारियों के संपर्क में आ चुका था। सज्जन और वन कन्या के पारस्परिक सम्बन्धों को लेकर कथा वस्तु में अनेक प्रकार के उतार–चढ़ाव आते हैं, किन्तु अंततोगत्वा दोनों एक सूत्र में बांध जाते हैं। इसी बीच सज्जन का परिचय पागलों की सेवा करने वाले साधू बाबा रामजी से होता है। बाबा रामजी से वह बड़ा प्रभावित होता है। सज्जन परमार्थ की उस ऊंचाई को प्राप्त करने हेतु ऐसा व्रत लेता है जो समूची मानवजाति के लिए श्रेयस्कर है। सज्जन सामाजिक कल्याण हेतु अपना जीवन एवं संपत्ति अर्पित कर देता है।

'बूँद और समुद्र' की तीसरी प्रमुख कथा महिपाल, उसकी पत्नी कल्याणी तथा डॉ० शीला स्विंग से संबंध रखती है। महिपाल शुक्ल की कथा विस्तार, विविधता में सज्जन की कथा से किसी प्रकार कम नहीं है। वह अवध का निवासी है। उसके पिता आदर्शवादी विचारधारा के स्वाभिमानी एवं साहित्यिक वृत्ति के अध्यापक थे। महिपाल प्रगतिशील विचारों का, साथ ही मध्यवर्गीय संस्कारों से बंधा लेखक है, परंतु लेखकीय पेशा उसकी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति नही कर पाता। वह प्रायः धनाभाव मे जीता हैं। महिपाल अपनी तथा अपने मित्र की दृष्टि से प्रतिभाशाली लेखक हैं, परंतु उसके घर में उसके इस बड़प्पन का कोई महत्व नहीं हैं। उसकी पत्नी कल्याणी परंपरागत मान्यताओं तथा आदशोंको मानने वाली, एक पतिव्रता, अशिक्षित और रूढ़िवादी पत्नी है। वह महिपाल के लेखकीय व्यक्तित्व को न तो समझ पाती है, और न उसे आदर दे पाती है। वह अतृप्त है। पत्नी के व्यवहार से वह कुंठाग्रस्त भी हो जाता है। लखनऊ की प्रसिद्ध डॉक्टर शीला स्विंग से उसका परिचय

हुआ। शील का भारतीय ईसाई थी और उसमें भारतीयता के प्रति भक्तिभावना थी। शीला स्विंग की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। क्रमशः दोनों निकट आते हैं और प्रेमी–प्रेमिका बन गए। शीला तन–मन–धन से उसकी हो गई। शीला यह जानते हुए भी कि महिपाल का भरा–पूरा परिवार है, वह महिपाल को छोड़ नहीं पाती और न ही महिपाल को अपनी पत्नी तथा परिवार से अलग हो जाने को प्रेरित करती है। महिपाल दो नावों पर पैर रखकर आगे बढ़ता जाता है। घटना–क्रम उसे अपना परिवार छोड़ने को विवश करता है, परंतु सामाजिक लोकलाज उसे शीला को अपनाने नहीं देती। मित्रों के प्रयत्न से वह पुनः घर आ जाता है। अपनी भांजी के विवाह के अवसर पर, उनके द्वारा ननिहाल मे की गयी चोरी का लाला रूपरतन द्वारा सार्वजनिक कर दिया जाता है। महिपाल इस बदनामी को सहने मे असमर्थ है। वह दैनिक पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखकर चोरी के अपराध को स्वीकार करता है और अंततः नदी में डूबकर आत्महत्या कर लेता है। महिपाल के अंतर्विरोधी चरित्र की यह परिणत कथा की त्रासद परिणति है।

उपन्यास की उपर्युक्त प्रमुख तीन कथाओं के अतिरिक्त और भी अनेक छोटी कथाएँ हैं जो व्यापक समाज जीवन के चित्र को पूरा करने में अपना योग देती हैं। कुछ ऐसी कथाओं की ओर हम अंगुलीनिर्देश कर सकते हैं, जैसे– भमूति सुनार के घर और परिवार की कथा, बड़ी बहू, कवि विरहेश–रोमांस, तारा–वर्मा का प्रेम विवाह, मास्टर जगदंबा सहाय की कथा, चित्रा के रोमांस, महिला–सेवा–मण्डल का रहस्योद्घाटन, रामजी बाबा की कथा आदि। इस प्रकार की अनेक कहानियाँ मुहल्ले के जीवन का अंग बनकर उपन्यास में आयी हैं। उपन्यास मे वर्णित सभी छोटी––बड़ी अंतर–कथाओं का अपना महत्व है। प्रकारांतर से वस्तुपक्ष की रोचकता बरकरार रही है। दूसरी ओर पात्रो व्दरा दिए गए लघुदृष्टांतों एवं किस्से–कथाओं का तों यह कोश है।

वास्तव में अमृतलाल नागर के लिए चौक, महज एक स्थान नहीं था। उनके लिए यह लखनवी समाज, सभ्यता और संस्कृति का जीता–जागता इतिहास था, जहाँ उनकी रचनात्मकता ने विस्तार पाया। एक तरह से वह उनके लिए भारतीय समाज, खासकर मध्यवर्ग की जिंदगी में आ रहे उतार–चढ़ाव का साक्षी था। शायद इसीलिए रामविलास शर्मा ने उनके लिए कहा भी है कि– 'विचारधारा ने वह गांधीवादी हैं अथवा यों कहें गांधी जी के भक्त हैं, लेकिन आदमी वह खास चौक लखनऊ के हैं।'[7] लखनऊ पर केन्द्रित अपने एक साक्षात्कार में नागर जी ने इस बात को स्वीकार किया है कि उनकी रचनात्मकता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष लखनऊ में चौक का जीवन रहा है।[8] यही कारण है कि उनहोंने अपने सभी उपन्यासों और महत्वपूर्ण कहानियों में घोषित–अघोषित रूप से लखनऊ के जन–जीवन का चर्चा उठाया है तथा उसके माध्यम से लखनऊ और भारतीय समाज की बदलती हुई मानसिकता का यथार्थ चित्र अंकित किया है।

संदर्भ

1. अमृतलाल नागर, बूंद और समुद्र, पृष्ठ 219
2. डॉ० मुरलीधर नायक– अमृतलाल नागर : जीवन और साहित्य, पृष्ठ 46
3. शरद नागर– अमृतलाल नागर रचनावली खंड–1 भूमिका से, पृष्ठ 15
4. शरद नागर– अमृतलाल नागर रचनावली खंड–10 ('टुकड़े टुकड़े दास्तान'), पृष्ठ 151
5. शरद नागर– अमृतलाल नागर रचनावली खंड–2 ('बूंद और समुद्र') भूमिका से
6. शरद नागर– अमृतलाल नागर रचनावली खंड–2 ('बूंद और समुद्र'), पृष्ठ 319
7. रामविलस शर्मा, आस्था और सौंदर्य, पृष्ठ 134
8. कथाकार अमृतलाल नागर (शहर की संस्कृति और इतिहास के कुछ सवाल)– देवेंद्र चौबे, पृष्ठ 136

शोध छात्र (हिन्दी विभाग),
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बड़ौदा (गुजरात)
vpyadav086@gmail.com

❖

वर्ष : 10
अंक - 17

साहित्य वीथिका

ISSN : 2319-6513
दिसम्बर 2020

UGC Approved Research Journal No. 47845

संपादक
डॉ. दिलीप मेहरा

❍

परामर्शक
डॉ. पारुकान्त देसाई, डॉ. बापूराव देसाई (महाराष्ट्र), डॉ. दिनेश कुशवाहा (रीवा)
तेजेन्द्र शर्मा (लंदन), डॉ. मदनमोहन शर्मा, डॉ. सुरेश गढवी

❍

संरक्षक
डॉ. मालती दुबे, डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़'

❍

सम्पादक मण्डल
डॉ. शिवप्रसाद शुक्ल (उपसंपादक)
डॉ. दीपेन्द्र जडेजा, डॉ. प्रेमचन्द कोराली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, डॉ. हसमुख परमार

❍

प्रकाशक
उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
ए-685, आवास विकास, हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर-208021
मो. 8707662869, ई-मेल : utkarshpublishersknp@gmail.com

❍

कला सज्जा
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

❍

व्यवस्थापकीय पता
शोभा मेहरा
यश भवन, प्लॉट नम्बर - 1423/1, शालिनी अपार्टमेंट के पीछे,
नाना बाजार, वल्लभ विद्यानगर, जि. आणंद - 388120
ई-मेल : mehradilip52@gmail.com, सचलभाष - 9426363370

पत्रिका में प्रकाशित कविता, लेखादि में अभिव्यक्त विचारों से प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवादों के लिए न्यायालय का क्षेत्र आणंद, गुजरात होगा।

Peer reviewed bilingual bi-annual International Research Journal

सदस्यता शुल्क
वार्षिक 200 रुपये
पंचवर्षीय 1500 रुपये
आजीवन 3000 रुपये
संस्था के लिए : वार्षिक 300 रुपये
आजीवन 3500 रुपये

अनुक्रमणिका

शोध / समालोचा

1. कृष्णा सोबती एवं अमृता प्रीतम आमने–सामने
डॉ. सुनीता शर्मा 07
2. किन्नर अस्मिता की संघर्ष गाथा : 'मेरे हिस्से की धूप'
डॉ. दिलीप मेहरा 12
3. वासंतिक सौंदर्य और हिन्दी लोकगीत
डॉ. रवीन्द्र मकवाणा 19
4. गुजराती एवं राजस्थानी लोकगीत व्याख्याएँ एवं वर्गीकरण
सोहिल हारूनभाई शेलत 21
5. मंजूर एहतेशाम के कथा–साहित्य में परिवर्तनकारी नेतृत्व
राज बहादुर गौतम 24
6. वृद्ध विमर्श और अधिरोहिणी कहानी 'अग्निदाह'
नीलम वाधवानी 27
7. पारिवारिक विस्थापन के दर्द को झेलते किन्नर–हिन्दी कथा साहित्य के सन्दर्भ में
डॉ. पार्वती जे. गोसाईं 31
8. 'अपनी जमीं अपना आसमां' आत्मकथा में निरुपित व्यकितगत संघर्ष
राधा तलपदा 35
9. अमरकान्त की कहानियों में मध्यवर्ग का सामाजिक स्वरूप
प्रमोद कुमार 38
10. समाज की पथ–प्रदर्शक लोकोक्तियाँ (भोजपुरी और अवधी के संदर्भ में)
संगम कुमार वर्मा (शोध छात्र) 40
11. आधा आदमी : एक अभिशाप
डॉ. अनिला मिश्रा 44
12. विजयदान देथा के साहित्य में अभिव्यक्त समाज
डॉ. सुरेश सिंह राठोड़ 48
13. जन्मेयजय का नागयज्ञ नाटक में गांधी विचार
डॉ. जितेन्द्रकुमार जेसिंगभाई वणझारा 53
14. क्या भूलूँ क्याद याद करूँ : हरिवंशराय बच्चन
प्रा. दशरथ चौहान 55
15. अमेरिका में हिन्दी
डॉ. ईश्वर आहिर 58

व्यक्तित्व

16. एक अनुकरणीय व्यक्तित्व : डॉ. मालती दुबे
बीना आर्य 60
17. मानवीय संवेदनाओं एवं संघर्षों के उद्‌घोषक : पं. गंगाप्रसाद मिश्र
विजय प्रकाश यादव 64
18. पद्‌मश्री स्वर्गीय कान्तिभाई पटेल की कलायात्रा (1925–2019)
अरविंद सुथार 68

दर्शन

19. वर्तमान मानव–जीवन में गोरख–दर्शन की प्रासंगिकता **प्रा. वेकरिया गोविंद टी.** 71
20. गोरक्षनाथ की साधना–पद्धति : हठयोग
जोशी विभा प्रफुल्लभाई 75

समाज

21. साइबर अपराध और सोशल मीडिया की भूमिका
डॉ. दयाशंकर सिंह यादव 79
22. हिन्दी भाषा, साहित्य और सिनेमा
डॉ. धनंजय चौहाण 84
23. महामा गान्धी और राष्ट्रभाषा हिन्दी
अनुराधा सिंह 87

कविता

- कविता
डॉ. धीरजभाई वणकर 43
- कविता
डॉ. धीरजभाई वणकर 47
- बसंत
मुकेश कुमार ऋषि वर्मा 57
- स्त्री 70
प्रा. आंचल तिवारी
- फरिश्ता 70
पूनम सिंह

English

24. In TahmimaAnam's*The Bones of Grace* and Shobha Rao's *An Unrestored Women*
Ansari Kaisarjahan M **92**
25. To Understand The Impact of Mental State after Watching Webseries on A Medical Student
Dr. Hitesh Purohit **96**
26. Survey The Impact of Using Smart Phones on Homoeopathic Students of First and Second Year
Dr. Hitesh Purohit **101**

मानवीय संवेदनाओं एवं संघर्षों के उद्घोषक : पं. गंगाप्रसाद मिश्र

❖ विजय प्रकाश यादव

पं. गंगाप्रसाद मिश्र जी को कहानी सुनने का शौक बचपन से ही था। उन्होंने एक बार कहा था कि ''बचपन में कहानियॉ सुनने का चाव किसे नहीं होता। मुझे यह शौक रोग की सीमा तक पहुॅचा हुआ था। उनकी स्मृति अब तक इस कारण से बनी हुई है कि इसे लेकर दो–चार बार अच्छी तरह मार भी पड़ी थी।'' उन्होंने एक अन्य स्थान पर लिखा है– ''कहानी सुनने की लालसा बचपन में ही बलवती उठी थी। इसके लिए अपनी मां से दुराग्रह करता था, उन्हें काम न करने देता था तो वह मार बैठती थीं। मैं बिछौने पर जाकर लेटा रहता था, पर कहानी सुने बिना नींद न आती थी। इसलिए पड़ा–पड़ा रोता रहता था। काम निपटाकर मॉ आती थीं, तो पुचकारकर कहानी सुनाती थीं। मॉ के निधन के पश्चात् जब कहानी सुनने का साधन न रहा, तो कहानी पढ़ने लगा।'' मिश्र जी ने कहानी पढ़ते–पढ़ते अपना नाम लेखक के रूप में छपा देखने की इच्छा भी घर कर गई और फिर कहानी तथा उपन्यास पढ़ने के साथ–साथ कहानी लिखने का सिलसिला भी शुरू हो गया। मिश्र जी ने पहली कहानी– 'आडंबर' सन् १६३४ में लिखी थी और तब से अब तक मिश्र जी लगभग २०० कहानियॉ लिख चुके हैं। इनमें से कुछ उनके आठ कहानी संग्रहों – 'सरोद की गत', 'नया खून', 'आदर्श और यथार्थ', 'नई राहें', 'कांटों का ताज', 'बाहों के घेरे गर्दन की मजबूरियॉ', 'दूधपूत' और 'बिगुल' (छात्रोंपयोगी) के माध्यम से हिंदी पाठकों के समक्ष आ चुकी है। और कुछ 'सुधा', 'माधुरी', 'तरुण', 'संगम', 'हंस', 'वर्तिका', 'ज्ञानोदय' और 'ध र्मयुग' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर मित्र जी की लेखनी की शक्ति और क्षमता को प्रमाणित कर चुकी है। कुछ छात्रोंपयोगी कहानियॉ 'मकरंद' कहानी संग्रह में संग्रहित है।

मिश्र जी की कहानी सृष्टि अपने परिमाण के कारण ही ध्यानाकर्षक नहीं है, वरन् उसके विविध रंग मानव–मन और समाज के अपार वैविध्य और वैचित्र्य को साकार करते हैं। उनकी कहानियों में विषय और प्रस्तुतीकरण की विविधता दर्शनीय हैं। प्रायः सभी साहित्यकारों ने स्वीकार किया है कि साहित्य जीवन की अनुकृति है। साहित्य की अत्यंत लोकप्रिय विधा कहानी में जीवन के अनेक विशिष्ट क्षण, घटनाएं और चरित्र मुखर हो उठते हैं। सुप्रसिद्ध कथाकार श्री इलाचंद्र जोशी ने लिखा है कि– ''वर्तमान युग की छोटी कहानी एक प्रकार की गद्य–कविता है, जो वास्तविक जीवन के आधार पर खड़ी होती है। जीवन का चक्र नाना परिस्थितियों के संघर्ष से उल्टा–सीधा चलता रहता है। इस सुवृहत् चक्र की किसी विशेष परिस्थिति की स्वाभाविक गति को प्रदर्शित करने में ही कहानी की विशेषता है।'' मिश्र जी की कहानियों में जीवन के इस सुवृहत चक्र के पुष्कल चिन्ह अंकित हैं। मिश्र जी ने जीवन के एक–एक क्षण को बड़ी रूचि के साथ जिज्ञासु दृष्टि रखते हुए जिया है। अपने संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन के प्रति उनका कौतूहल और संवेदना सजग रही है, अतएव उनकी कहानियों में नित्य नवीन विषयों की कमी नहीं रही है। जैसे–जैसे मिश्र जी का अनुभव–क्षेत्र विस्तृत होता गया, उनकी कहानियों को विभिन्न वर्ग, विचार और स्तर के लोगों से कथावस्तु प्राप्त होती गई। मिश्र जी ने संसार के इन अजीबोगरीब लोगों को उनके यथार्थ रूप में प्रस्तुत

करने के लिए अत्यंत व्यापक दृष्टिकोण अपनाया है। उन्होंने अपनी कहानियों को विशिष्ट विषय, वाद और शिल्प की संकुचित तथा आत्मश्लाघी सीमाओं के परे रखा है। अतः उनकी कहानियों का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि उन्हें विभिन्न वर्गों में विभाजित करके देखना आवश्यक प्रतीत होता है। मिश्र जी की कहानियों को प्रेम कहानी, सामाजिक कहानी, ऐतिहासिक कहानी, राष्ट्रीय कहानी एवं कलाकारों से संबंधित कहानी तथा रेखाचित्र आदि वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। कहानियों के इन सभी वर्गों में से प्रेम कहानी और सामाजिक कहानी पर मानवीय संवेदना का क्रमशः पृथक–पृथक विचार किया गया है।

प्रेम कहानियाँ– मिश्र जी ने प्रेम को विषय बनाकर कुछ मार्मिक कहानियॉं लिखी हैं। प्रेम का मार्ग प्रायः कंटकाकीर्ण रहा है, प्रेमियों के मार्ग में रोड़े अटकाने वाले बहुत है, किंतु प्रेम में उनकी निराशा युग–युग से मानव जीवन को प्रभावित करती रही है। शेली ने लिखा है– "Out Sweetest songs are those that tell of the saddest thought."[4] प्रेमियों की सफलता की कथा हमारे मन को छू जाती है और हम बाधक तत्वों पर विचार करने के लिए विवश हो जाते हैं। मिश्र जी की अधिकांश प्रेम–कहानियॉं दुखान्त ही हैं। 'कलंक का टीका', 'मिलन', 'एक स्मृति' और 'मानसिक बवंडर : मृणाल के बंधन' आदि कहानियों में समाज, जाति और हमारे रूढ़िग्रस्त संस्कार प्रेमियों के मार्ग की बाधा बने हैं। 'कलंक का टीका' कहानी की इंदिरा अपनी हृदय–मंदिर के देवता सदन को इसलिए नहीं पा सकी, क्योंकि वह सारस्वत ब्राह्मण की पुत्री थी और सदन खत्री। समाज के क्रूर हाथों के द्वारा वह अपने प्रेमी से दूर कर दी जाती है। इतना ही नहीं, हमारा समाज यह भी सहन नहीं कर पाता कि वह अपने प्रेमी को कभी–कभी याद कर सके। इंदिरा वैध पुत्र भी सदन को याद करते रहने के कारण अवैध घोषित कर दिया जाता है और उसे 'कलंक का टीका' करार करके इंदिरा स्वयं अंधकार में विलीन हो जाती है। 'मानसिक बवंडर : मृणाल के बंधन' कहानी में भी गौतम के पिता की पंक्ति 'ईसाई धर्मावलंबी बहू घर में न आएगी तो जो जीवन में कभी त्रिवेणी और संध्या पूजा से विमुख नहीं हुआ उसकी सद्गति कैसे होगी'[5] शत–शत मुक्ति हिंदू समाज की जर्जर एवं रूढ़िग्रस्त मान्यताओं पर वज्र जैसा प्रहार करती है। इसी प्रकार कहानी 'मिलन' की सुशीला को भी कान्यकुब्ज ब्राह्मण और ठाकुर के भेद के कारण विरह– यातना सहनी पड़ती है। यह बात दूसरी है कि कमलाकांत के उपयुक्त निर्णय के कारण बैरिस्टर शुक्ला के यहॉं खुशी की दीपावलियॉं जल उठती हैं। कहानी की अंतिम पंक्ति मानो समाज की खोखली मान्यताओं को ध्वस्त कर देने का संकल्प लेकर प्रस्तुत होती है– "उन शत–शत दीपावलियों में उस समय शायद कान्यकुब्ज समाज के बीघे बिसवे भस्म हुए जा रहे थे।"[6] 'एक स्मृति' का नायक अपने पुराणपंथी विचारों के कारण ही अपने दिलो–दिमाग में बस जाने वाली युवती को अपना नहीं पाता। जाति–पॉंति की दीवारों के अतिरिक्त कभी–कभी धन भी प्रेमियों के मिलन में बाधक बनता है। 'मलका' शीर्षक कहानी में नायक–नायिका दोनों एक–दूसरे को हृदय से अपनाए हुए हैं। जबकि परिस्थितियों ने उन्हें काफी दूर कर दिया है, किंतु देश–प्रेम का आदर्श उनके निजी प्रेम पर भी भारी पड़ता है। सूरत तो दुश्मनों के कबीले की रानी के रूप में मलका को देखकर छोड़ भी देता है, किंतु मलका अपने मुल्क के लिए अपने काफिर प्रेमी को तीर का निशाना बनाने में संकोच नहीं करती। 'हमराह' कहानी का अख्तर भी कमरुन्निसा को देश–सेवा में बाधक देख उससे बहुत दूर चले जाने का निश्चय कर लेता है और जाते–जाते कमरुन्निसा को भी उसी मार्ग पर आने की प्रेरणा दे जाता है।

मिश्र जी की प्रेम–कहानियों की प्रमुख विशेषता यह रही है कि उनके चरित्रों में प्रेम की पुष्कल तीव्रता है, प्रेम के लिए संपूर्ण जीवन समर्पित कर देने की भावना है, किंतु उनकी कहानियों में प्रेम वासना से बहुत दूर रहा है। 'मानसिक बवंडर : मृणाल के बंधन' कहानी की चपला और प्रतिमा को अपने प्रेमियों के निकट संपर्क में आने का पर्याप्त अवसर मिलता है और उनके बहकने के पर्याप्त सुयोग ही नहीं मिलते, वरन् अपने अभिभावकों का वर्जन–तर्जन भी उनके मार्ग को अवरुद्ध नहीं करता, किंतु उनका प्रेम वासना के छीटों से कलुषित नहीं हो पाता। 'मॉंग' कहानी मिश्र जी की अन्य प्रेम कहानियों से कुछ अलग है। प्रस्तुत कहानी बदलते जीवन–मूल्यों का समर्थन करती प्रतीत होती है और प्राचीन मान्यताओं के विपरीत शरीर और मन की मॉंग की यथार्थपरक अभिव्यक्त करती है। इस कहानी की नायिका ललिता अपने पति की मृत्यु के पश्चात् अपने सुखी दांपत्य जीवन को भूलकर एक अन्य पुरुष प्रमोद को अपना स्वप्न–पुरुष मान बैठती है। समाज की आलोचना की उपेक्षा करती हुई वह तन और मन

से प्रमोद का वरण कर लेती है। अपनी अनन्य सहेली द्वारा समझाने पर वह कहती है– ''मैं मानती हूँ कि ख्यात की एक लालसा होती है लोगों की श्रद्धा और आदर पाने का भी एक नशा होता है, लेकिन यही सब कुछ नहीं होता है। इससे कहीं अधिक तीव्र लालसा तन की मॉग की होती है जिसके लिए लुट जाने की, बर्बाद हो जाने की ललक होती है, उस वेगवती सरिता की बाढ़ के आगे आदर्श के सारे महल ढहते चले जाते हैं। जरा इस बात पर विचार कर– जैकलिन को अमेरिका ने क्या नहीं दिया था और क्या कुछ करने को न्यौछावर नहीं था लेकिन आदर्श के उस सोने की कौर से उसका मन न भरा और वह उसे ठुकराकर चली गई। मन की कुछ ऐसी ही मजबूरी हुआ करती है। प्रेमी, किसके कारण आदमी दीवाना हो जाता है, कुछ और उसे सुझाई ही नहीं देता। मेरी भी स्थित ऐसी है– जहॉ से वापस आ सकने का कोई उपाय नहीं है।''[7]

सामाजिक कहानियॉ– मिश्र जी की प्रेम–कहानियों में केवल प्रेमियों का सीमित प्रणय–जगत नहीं है, उसमें भी समाज के अन्याय और उसकी पाशविक हृदयहीनता की झलक दिख जाती है, किंतु मिश्र जी की अनेक कहानियॉ ऐसी हैं जो सामाजिक कुरीतियों पर चोट करने के लिए ही लिखी गई हैं, जिन्होंने ऐसी रूढ़ियों पर कुठाराघात करने के लिए ही अच्छर–रूप धारण किया है, जो समाज के उत्थान में बाधक सिद्ध हुई हैं। इन कहानियों में केवल थोथी सामाजिकता मान्यताओं का खंडन ही नहीं हुआ है, वरन् इन कुरीतियों से उबरने को लालायित नई पीढ़ी के बदलते जीवन–मूल्यों का आकलन भी हुआ है और साथ ही इस शोषण–वृत्ति से खुलकर संघर्ष करने की लेखक की कामना भी व्यक्त हो गई है।

'महाराजिन' मिश्र जी की प्रारंभिक रचनाओं में से एक है, किंतु वह कहानी दहेज प्रथा के क्रूर अभिशाप को बड़ी ही मार्मिकता और कलात्मकता से उद्घाटित कर देती है। रचनाकार की लोक–संवेदना और अल्पवयस्कता के बावजूद उसकी अद्भुत शिल्प–क्षमता के कारण इस कहानी को बहुत ख्याति और प्रशंसा मिली थी। इस कहानी में एक ओर रामसनेही जैसी फूल–सी सुकुमार किशोरियों का दारुण कथा है, जिन्हें विपुल दहेज के अभाव में अपने मधुर स्वप्नों की दुनिया को बरबस भूल जाना पड़ता है और विवशताओं व विपत्तियों को गले के नीचे उतारना पड़ता है। दूसरी ओर चंद्रशेखर उर्फ चन्दा की मनोव्यथा चित्रित हुई है जो अपने समाज के क्रूर अत्याचार के अनुभव तो करते हैं, किन्तु लोग–मर्यादा के कारण मुँह नहीं खोल पाते। कहानीकार ने परिस्थितियों के यथार्थ को तो प्रस्तुत किया ही है, साथ ही उस युवाशक्ति का आभास भी करा दिया है, जो चाहने पर कुरीतियों की कालीमा के नामोनिशान को मिटा सकती है। चंदा अपने पिता को खोकर भी दोबारा विवाह न किए जाने के अपने निर्णय पर अटल रहता है और रामसनेही और चन्दा से मिलन हो ही जाता है। इसी प्रकार 'खिलौनों का दहेज' कहानी की शोभना भी अपनी युक्त से दहेज के रूप में पराए की संपत्ति का मुँह जोहने वालों को करारा जवाब देती है, इतना ही नहीं स्वयं नौकरी करके अपने पैरों पर खड़े होने का निश्चय कर लेती है और उसके पति रजनीश को उसके समक्ष झुकना ही पड़ता है। जब रजनीश उसे विदा कराने आता है तो उसका कथन दहेज के दीवाने लड़कों के लिए चुल्लू–भर पानी में डूब मरने की स्थिति उत्पन्न कर देता है और दहेज प्रथा से उत्पीड़ित नव–युवतियों के समक्ष उनके आदर्श को बड़ी व्यंग्यात्मक शैली में उपस्थित कर देता है। शोभना रजनीश से कहती है– ''आपने व्यर्थ है एक कष्ट किया। मैं तो खुद आपको भी बिदा करवाने आती। मैंने यह नौकरी इसलिए की थी कि जो कुछ सामान आप चाहते हैं वह अपनी बचत से खरीद लूँ तो आपको विदा करवा लाऊँ।''[8] 'पति–परमेश्वर' कहानी की 15 वर्षीय किशोरी सावित्री भी पर्याप्त दान–दक्षिणा न जुटा पाने के कारण अपने पिता के द्वारा एक कंजूस, बदशक्ल और संकालु अधेड़ के माथे मढ़ दी जाती है। वह उसे पति–परमेश्वर मान उसके मानसिक अत्याचार को सहन करती है, किंतु सहनशीलता का बॉध टूट जाने पर अनुसूया जी के पारंपरिक आदर्श 'पति तो स्त्री का परमेश्वर है। वह चाहे सुख दे या दुख, आँचल पसार कर लेना चाहिए' को ठुकराकर अंधकार में विलीन हो जाती है। स्पष्ट है कि मिश्र जी स्त्री को पैर की जूती समझने वाले पुरुष–अहंकार को ठोकर मारने के पक्ष में हैं।

मिश्र जी आदर्शोंन्मुख यथार्थवादी कहानीकार हैं। परंतु उनका आदर्श दकियानूसी परंपराओं के घेरे में गुटर–गूँ नहीं करता है। वह प्रगतिशील दृष्टिकोण की भव्य उपज हैं। समय और परिस्थितियों के अनुसार

उनके आदर्श का ब्रह्म रूप परिवर्तनशील रहा है, परंतु उसकी आत्मा उन्हीं मूल्यों एवं सत्यों के चौखटों में सुशोभित रही है, जिन्हें हम शाश्वत या सनातन कह सकते हैं। 'जीवन' की तारा जीवन की मृत्यु पर वही अनुभव करती है जो मध्यकाल की तेजस्विनी स्त्रीअनुभव किया करती थीं। वही भावना, वही गर्व, बदली है तो सिर्फ परिस्थितियॉ या समय। 'पाक—कफन' की शबनम क्या गोरवपूर्ण आदर्श परंपराओं को अक्षुण्ण बनाए रखने में सहकार नहीं देती ? मिश्र जी के 'बड़े मामा' हों या 'हकीम जी', उनकी 'घर की रानी' हो या 'मलका'— सभी ने सांसारिक संघर्षों, बदलते समय और घटते मूल्यों में आदर्श की उजली रीति निभाई है। उनका आदर्श यथार्थ की ठोस धरती पर सुस्थापित है, केवल भावनाओं वाले रेत के टीलों पर नहीं। मिश्र जी के पात्र आदर्श में 'देव' नहीं बन जाते, वे 'मानव' ही रहते हैं और इसी विशेषता के कारण उनका अधिकांश आदर्श गले उतर जाता है। इस दृष्टि से उनकी 'इंसान और शैतान' उत्कृष्ट है।

पूँजीवादी व्यवस्था से उत्पन्न सामाजिक विषमता का साम्यवादी या समाजवादी दृष्टिकोण से चित्रण हुआ है। मिश्र जी का कहानीकार इस पर अपनी कलम कैसे न उठाता ? उनकी कहानियों में शोषणजन्य परिस्थितियों का बड़ा ही करुण वर्णन है और भावुक पाठक तो शायद इन्हें पढ़कर रो ही दे। 'एक दिन' कहानी में भी शोषण का हृदय विदारक चित्र है, परंतु शोषण से जूझने की भावना का नितांत अभाव है, जो अखरता है। वैसे ही, 'गंगालाभ' कहानी में धार्मिक पाखंडबाजी के प्रति क्रोध है, घृणा है, परन्तु विद्रोह करने की तैयारी नहीं है। मिश्र जी की कहानियों में मन द्रवित करने की क्षमता है, परंतु बॉहों की मछलियों को फड़फड़ाने की सामर्थ्य नहीं है। उनकी कहानियों में व्यवस्थाओं के प्रति असंतोष अवश्य है, परंतु उनको घसीटने की मजबूरी भी है।

मिश्र जी संवेदनाओं के कुशल चितेरे हैं। मेरे विचार से प्रेमचंद के बाद मिश्र जी ही एक ऐसे प्रबुद्ध कहानीकार हैं जिन्होंने मानवीय संवेदनाओं का मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। विवरण कहीं—कहीं अतिरंजित अवश्य हो गया है, परन्तु इसमें दोष उनकी अतिशय भावुक प्रकृति का ही है। इतना होते हुए भी, यह तो हर कोई मानेगा कि उनकी लेखनी में पीड़ा को पहचानने एवं उजागर करने की मजबूत पकड़ है। मिश्र जी स्वयं संगीतरसिक रहे हैं। उनकी जीवन—सरणि को अपने खुली आंखों से देखा, परखा है। यही कारण है कि उनकी कहानियों में संगीतकारों—कलाकारों की अंतर्वेदना संवेदनशीलता के साथ मुखरित हुई है। इस दृष्टि से उनकी 'खानदानी पीलू' कहानी सशक्त है। इसमें अपने वक्त के मशहूर गायक के तन—मन से टूटने का पीड़ा—दर्शन बखूबी से चित्रित हुआ है। युग की मार से टूटा गायक जब अपने बेटे से कहता है कि बेटा, तुझे गायक नहीं बनाऊंगा, तो लगता है की जैसे गायक समाज का संपूर्ण दर्द समूची पीड़ा सिमटकर इस वाक्य में समाहित हो गई हो।

सरांशतः पं. गंगाप्रसाद मिश्र एक कुशल सृजनधर्मी कहानीकार हैं जो समष्टिगत आचारों—विचारों एवं सम—सामयिकता से प्रतिबद्ध हैं। उनकी कथादृष्टि में संवेदना और संरचना के धरातल पर जटिल एवं कुंठा—ग्रस्त जीवन का बिखराव नहीं है और न ही उन्होंने अमूर्त अभिव्यंजना पर ही अधिक बल दिया है। कुल मिलाकर मिश्र जी की कहानियॉ हिंदी साहित्य को एक बहुमूल्य देन है।

सन्दर्भ

1. लेखक के चारों ओर, आकाशवाणी लखनऊ केंद्र से प्रसारित मिश्र जी की वार्ता, उद्धृत — गंगाप्रसाद मिश्र ग्रंथावली, खण्ड— ३, सम्पादक रू डॉ. इंदु शुक्ला, पृ. सं. १२६
2. डॉ. दयाशंकर शुक्ल द्वारा पूछी गई प्रश्नावली के उत्तरों से, उद्धृत — गंगाप्रसाद मिश्र ग्रंथावली, खण्ड— ३, सम्पादक : डॉ. इंदु शुक्ला, पृ. सं. १२६
3. हिन्दी कहानी : एक अंतरंग परिचय, पृ. २ से, उद्धृत— गंगाप्रसाद मिश्र ग्रंथावली, खण्ड— ३, सम्पादक : डॉ. इंदु शुक्ला, पृ. सं. १२७
4. गंगाप्रसाद मिश्र ग्रंथावली, खण्ड—३, सम्पादक : डॉ. इंदु शुक्ला, प्रकाशक : गौरव बुक्श दिल्ली, पृ. सं. १२७, १२८,
5. रजिस्टर नं. ३, पृ. २५५, उद्धृत, गंगाप्रसाद मिश्र ग्रंथावली, खण्ड— ३, सम्पादक : डॉ. इंदु शुक्ला, पृ. सं. १२८
6. रजिस्टर नं. १, पृ. १८, उद्धृत, गंगाप्रसाद मिश्र ग्रंथावली, खण्ड— ३, सम्पादक : डॉ. इंदु शुक्ला, पृ. सं. १२८
7. रजिस्टर नं. ४, पृ. ७३—७४, उद्धृत, गंगाप्रसाद मिश्र ग्रंथावली, खण्ड— ३, सम्पादक : डॉ. इंदु शुक्ला, पृ. सं. १३१—१३२
8. रजिस्टर नं. ४, पृ. ६१ उद्धृत, गंगाप्रसाद मिश्र ग्रंथावली, खण्ड— ३, सम्पादक : डॉ. इंदु शुक्ला, पृ. सं. १३३

शोध छात्र (हिन्दी विभाग)

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, वडोदरा (गुजरात)

****

Print

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA

PUBLICATION CERTIFICATE

Name of Ph.D. Supervisor Dr.Dipendrasinh Pushpendrasinh Jadeja

Published Articles/Papers in Journals

Sr No.	Author(s)	Paper Title	Journal Name & ISSN & Volume No.	Published Year	DOI	Index in Scopus/UGC CARE/Clarivate	Document Submitted?
1	VIJAY PRAKASH YADAV	MAANVIY SAMVEDNAON EVAM SANGHARSHON KE UDGHOSHAK : PANDIT GANGAPRASAD MISHRA	Journal Name: SAHITYA VITHIKA, ISSN: 23196513, Volume No.: 17	1-12-2020		In Scopus: No, In UGC CARE: No, In Clarivate: No	Submitted
2	Prof.Dipendrasinh Jadeja	krantikari rachana ke sandarbh mei shambuk	Journal Name: hindi anushilan, ISSN: 2249-930x CARE LIST, Volume No.: 1	1-3-2020		In Scopus: Yes, In UGC CARE: No, In Clarivate: No	Not Sumbitted
3	VIJAY PRAKASH YADAV	'BUND AUR SAMUDRA' UPANYAS ME PRATIBIMBIT LUCKNOW KA JANJIVAN	Journal Name: SAHITYA VITHIKA, ISSN: 23196513, Volume No.: 16	1-12-2019		In Scopus: No, In UGC CARE: No, In Clarivate: No	Submitted
4	Prof.Dipendrasinh Jadeja	Gandhiji ka bhasha chintan	Journal Name: Samanvay paschim, ISSN: 2582-0907 CARE LIST, Volume No.: 4	1-12-2019		In Scopus: Yes, In UGC CARE: No, In Clarivate: No	Not Sumbitted

43 Dr. Dipendrasinh Jadeja	Geet parampara aur prayog	Brajbhasha Kavya Vimarsh Tatha Hindi Geet Parampara Evam Prayog	Uttar Pradesh Hindi santhan and dept. of Hindi, M.S.U Baroda	16-12-2006	Submitted
44 Dr. Dipendrasinh Jadeja	Hindi Geet parmpara aur Navgeet	Navgeet Vimarsh	Hindi sahitya academy, Gandhinagar and dept. of Hindi, M.S.U. of Baroda	22-3-2006	Submitted
45 Dr. Dipendrasinh Jadeja	Kalank : kalpit bhay ki kahani	A Literary Tribute to Anton Pavlovich Chekhov	UGC and Dept. of English, Hindi, Gujarati, Russian, M.S.U Baroda	28-2-2005	Submitted

I Undersign, agree that all submitted information in above format is true as per my knowledge and belief.

Dr.Dipendrasinh Pushpendrasinh Jadeja

DR. DIPENDRASINH JADEJA
PROFESSOR
Dept. of Hindi, Faculty of Arts,
The M. S. University of Baroda, Vadodara.

क्रम संख्या......303

कालीचरण पी.जी. कॉलेज, लखनऊ

(लखनऊ विश्वविद्यालय से सहयुक्त एवं राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा मूल्यांकित)

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

19–20 फरवरी, 2020

अमृतलाल नागर के कथा साहित्य में सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य

स्थान : बहुद्देशीय सभागार, कालीचरण पी.जी. कॉलेज, लखनऊ

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/श्रीमती/डॉ. विजय प्रकाश यादव संस्था महाराजा सयाजीराव वि. वि. बड़ौदा बड़ौदरा (गुजरात) ने सहभागिता की तथा अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ विषय पर शोध–पत्र/वक्तव्य/मुख्य वक्तव्य/अध्यक्षीय वक्तव्य / अतिथि वक्तव्य प्रस्तुत किया।

डॉ. उदय प्रताप सिंह	**डॉ. पंकज सिंह**	**डॉ. देवेन्द्र कुमार सिंह**
अध्यक्ष	संयोजक	प्राचार्य
हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज	कालीचरण पी.जी. कॉलेज, लखनऊ	कालीचरण पी.जी. कॉलेज, लखनऊ

क्रम संख्या 506

हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

तथा

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

गंगाप्रसाद मिश्र जन्मशताब्दी–समारोह

एवं

राष्ट्रीय–संगोष्ठी

शनिवार, 28 जनवरी, 2017

गंगाप्रसाद मिश्र की रचनाधर्मिता

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/सुश्री/श्रीमती/डॉ० विजय प्रकाश यादव, शोधार्थी एम॰ एस॰ वि॰ वि॰ वड़ोदा

ने सहभागिता की तथा "गंगा प्रसाद मिश्र के कथा साहित्य में लखनऊ"

विषय पर शोध-पत्र/वक्तव्य/मुख्य वक्तव्य/अध्यक्षीय वक्तव्य/अतिथि वक्तव्य प्रस्तुत किया।

प्रो० पवन अग्रवाल
संयोजक-संगोष्ठी

प्रो० प्रेम सुमन शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ